KFW

नाबार्ड

जीरो बजट प्राकृतिक खेती

ऐसी खेती जिसमें सब कुछ प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है, जिसमें किसी प्रकार के रासायनिक खाद, कीटनाशक या हाईब्रिड बीज का इस्तेमाल नहीं किया जाता है।

''पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर''

जीवामृत बनाने की विधि

पानी 200 Ltr.

+

गाय का ताजा गोबर (10 kg)

+

गौ मूत्र (8 Ltr.)

+

गुड़ / सड़े गले फल (2 kg)

+

दालों का आटा (2 kg)

+

एक मुठ्ठी खेत के मेंढ़ की साफ मिट्टी या जंगल से एकत्रित मिट्टी।

↓

सभी सामग्री को अच्छे से मिलाकर टाट की बोरी से ढक कर छाया में रख दें।

↓

सुबह व शाम 2 दिन तक 2-3 बार लकड़ी से हिलाना है।

↓

जीवामृत तैयार है।

बीजामृत बनाने की विधि

गाय का ताजा गोबर 5 kg को कपड़े में बांध कर 20 Ltr. पानी में 12 घन्टे के लिए लटका दें।

↓

1 Ltr. पानी में 50 gm चुने को मिलाकर एक रात के लिए रखें।

↓

अगले दिन गोबर की पोटली को 3 बार लगातार उसी पानी में निचोड़ लें एवं इस पानी में एक मुठ्ठी खेत के मेढ़ की साफ मिट्टी मिला दें।

↓

अब इस मिश्रण में 5 Ltr. गौ मूत्र एवं चुने के पानी को मिलाकर अच्छे से हिलायें।

↓

बीजामृत तैयार है।

प्रयोग की विधि :- 200 Ltr. जीवामृत एक एकड़ कृषि भूमि में एक बार उपयोग के लिए पर्याप्त है। ● तैयार जीवामृत को 7 दिन के अन्दर प्रयोग करें। ● जीवामृत को खेत में सिंचाई के साथ प्रयोग करें या छान कर फव्वारें या स्प्रेयर से फसल पर छिड़काव करें।

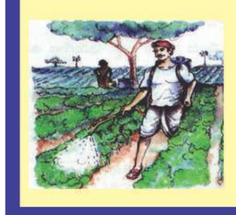

बीजोपचार की विधि :-

● बीज को बोरी पर फैला कर बीजामृत का छिड़काव करें। ● बीजामृत को बीज के साथ हाथ से मलकर अच्छे से मिलायें। ● छाया में सुखने पर 12 घंटों के अन्दर खेत में बुवाई करें।

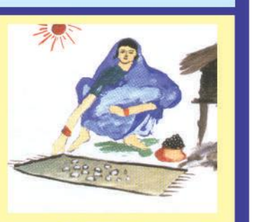

प्रकाशित:- गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर ● **सौजन्य:-** इण्डो जर्मन जलग्रहण विकास कार्यक्रम, नाबार्ड, जयपुर